केस स्टडी

जल कोठी से सामुदायिक पानी फिल्टर

टोला– **कांटा टोला**
गाँव– **तेल्हुआँ**
पांचायत– **द0 तेल्हुआँ**
प्रखण्ड– **नौतन**
जिला– **प0 चम्पारण**

गाँव का इतिहास :–

कांटा टोला एक ऐसा गाँव है जो चन्द्रावत नदी के किनारे बसा हुआ है। यहाँ से तीन किलोमीटर दक्षिण गढ़क नदी हैं। चम्पारण तटबंध की दूरी गाँव से दक्षिण 500 मीटर है। यह एक ऐस गाँव है जो हर साल बाढ़ से परेषान रहता हैं। इस गाँव में 33 परिवार के 200 से अधिक लोग रहते है। गाँव से सटे मझौलिया चीनी मिल का एक गन्ना तौल एवं संग्रह केन्द्र है जिसको कांटा कहते है। इसी के नाम पर गाँव का नाम कांटा टोला पड़ गया। गाँव में 60 प्रतिषत छोटे–छोटे किसान है तथा 40 प्रतिषत भूमिहीन किसान है। इस गाँव में 33 चपाकल है। जिसमें 10 चपाकल सरकारी तथा शेष नीजी है। सभी चपाकलों की गहराई 20 से 30 फिट है।

जल कोठी की सोच :–

वर्ष 2007 से ही गाँव के लोगों ने वर्षा के पानी को संग्रह करने की प्रक्रिया शुरू कर दिया। वर्षा के पानी का उपयोग बाढ़ के समय पीने के रूप में किया जाता रहा है। सामुदायिक स्तर पर 2007 से लेकर 2009 तक सामुदायिक वर्षा जल संग्रहण तकनीक को एक जगह लगाया गया था। जिसको देखकर गाँव वाले व्यक्तिगत स्तर पर भी एक–एक मीटर का प्लास्टीक पन्नी को खरीद कर अपने–अपने दरवाजे पर लगाये तथा छोटे–छोटे बर्तनों में वर्षा के पानी का संग्रह किये। पानी को रखने के लिए लोगों के पास कोई भंडारण की व्यवस्था नहीं थी। गाँव के लोगों की एक बैठक हुई। जिसमें वर्षा जल के भंडारण पर एक विचार किया गया। अन्ततः एक सोच बनी कि बाढ़ के दिनों में वर्षा के पानी को इक्कठा करने के लिए हमलोग जल कोठी बना सकते है। जिसमें 200 से लेकर

1000 लिटर तक पानी की क्षमता हो सकती है। इसकी सोच गाँव में अनाज भंडारण करने के लिए कोठी बनाने की परम्परा से ली गई है। लोगों का मानना था कि जब हम खाने के लिए अनाज को कोठी में रख सकते है। तो पीने के लिए पानी को जल कोठी में क्यों नहीं रख सकते है। तब गाँव क स्थानीय कारीगरों के द्वारा बांस, सिमेन्ट, बालु, नल के सहारे जल कोठी का निर्माण किया गया। इस तरह वर्षा के पानी को रखने के लिए जल कोठी का निर्माण कार्य शुरू हुआ।

जल कोठी को पानी फिल्टर के रूप में विकसित करना :–

कांटा टोला एक ऐसा गाँव है जहॉ एक भी कुआँ नही है। गाँव में समुदायिक स्तर पर अभियान की ओर से एक जल कोठी दिया गया था। इसी जलकोठी में वर्षा के दिनों में सामुदायिक स्तर पर वर्षा का पानी इक्कठा किया जाता था। गाँव के जलस्त्रोतो का पानी जाँच करने पर एक बात सामने आई कि गाँव के चपाकलों में आयरन, आर्सेनिक, वैक्टेरिया मौजुद है। आयरन की स्थिति तो 1.0 मिलिग्राम प्रति लिटर से अधिक पाई गई है। वर्षा के दिनों में लोगों को वर्षा का पानी पीने के लिए मिल जा रहा था। जो शुद्ध एवं स्वच्छ है। लेकिन लोगों के मन में एक ऐसा सवाल आया कि वर्षा के बाद तो गाँव वालें मजबुर है उसी आयरनयुक्त पानी पीने पर। गाँव में एक भी कुँआ नही है। मेघ पाईन अभियान के संस्थापक श्री एकलव्य प्रसाद के द्वारा क्षेत्र भ्रमण के दौरान कांटा टोला क जल कोठी को देखने के बाद एक विचार मन में आया कि क्यों न समुदाय के लिए वर्षा के बाद के दिनों में जल कोठी को ही पानी फिल्टर के रूप में विकसित किया जाय। फिर प0 चम्पारण अभियान की टीम को सुझाव के तौर पर दिया गया कि गाँव के लोगों से बात कर पानी फिल्टर की सोच को विकसित किया जाय। कांटा टोला गाँव के लोगों के साथ अभियान के साथियों की एक बैठक हुई जिसमें जल कोठी को पानी फिल्टर के रूप में विकसित करने के लिए एक तकनीक अपनाया गया। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि स्थानीय वृक्षा पड़ित के दरवाजे पर रखे गये सामुदायिक जल कोठी को एक नमुना के तौर पर पानी फिल्टर के रूप में बनाया जाय। जिससे कुँआ विहीन इस गाँव में कृत्रिम कुँआ के तौर पर पानी फिल्अर का उपयोग किया जायेगा। जिससे लोगों को शुद्ध आयरन रहित पीने का पानी मिल सके।

आयरन रहित पानी फिल्टर तैयार करने की सामग्री :–

जल तारा किट से किये गये पानी जाँच नतीजे यही बताते है कि इस पूरे इलाके के चपाकलों में आयरन की अधिकता है। जिसका मानव स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। परिणामतः इलाके में स्वच्छ एवं शुद्ध पानी सहज तथा सरल तरीके से लोगों तक पहुँचाने के लिए पानी फिल्टर विकसित किया गया है। जल कोठी को पानी फिल्टर के रूप में परिवर्तित करने के लिए जो प्रक्रिया अपनाई गयी थी वह इस प्रकार है–

1- 80 लिटर से अधिक पानी क्षमता वाले जल कोठी
2- सोनसेन्ड बालू 2 सी0एफ0टी0
3- लकड़ी का कोयला 2 किलोग्राम
4- ईट का चिप्स (टुकड़ा) 1 ईन्च साईज 3 किलोग्राम
5- जाल (प्लास्टीक नेट) 2 मीटर

सामुदायिक फिल्टर का उपयोगः–

कांटा टोला गाँव में जब से सामुदायिक पानी फिल्टर का निर्माण हुआ है। तब से गाँव के लोग इसी फिल्टर के पानी को पीते है। गन्ना के सीजन में गन्ना तौल के समय प्रतिदिन सैकड़ों बैलगाड़ी इस कांटा पर ठहरता है। यहाँ कांटा पर आने वाले सभी गाड़ीवान इसी सामुदायिक पानी फिल्टर से पानी पीते है। दूर–दराज से आने वाले ये सभी गाड़ीवान एवं यात्री लोग फिल्टर का उपयोग हमेषा करते रहते है।